उच्चमाध्यमिक समतुल्य पाठ्यक्रम

Higher Secondary Equivalency Course

दूसरा वर्ष

SECOND YEAR

XII

हिंदी

स्वाध्ययन सामग्री

Self Learning Material

केरल सरकार

शिक्षा विभाग

केरल राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण (KSLMA) और
केरल राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (SCERT)
द्वारा तैयार की गई

2018

सत्यमेव जयते

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा
द्राविड-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादर रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निर्भर है।

Prepared by

Kerala State Literacy Mission Authority (KSLMA)

TC 27/1461, Convent Road, Kammattom Lane, Vanchiyoor, Thiruvananthapuram-35
Ph: Off. (0471) 24722253/2472254 Tele-Fax : (0471) 2462252
E-mail : stateliteracymission@gmail.com Web: www.literacymissionkerala.org

State Council of Educational Research and Training (SCERT)

Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 2341883 Fax : 0471 2341869

First Edition	: 2016	Typesetting & Layout	: KSLMA
Second Edition	: 2018	Cover design	: KSLMA
Printed at	:		

© Department of Education, Government of Kerala

वक्तव्य

प्रिय बंधुओ,

अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में केरल राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण महत्वपूर्ण कार्य करते आ रहे हैं। साक्षरता कार्यक्रम के अलावा समतुल्य पाठ्यक्रम की योजना को भी मिशन ने सफल बनाया है। समतुल्य पाठ्यक्रम के अंतर्गत लाखों नवसाक्षरों ने दसवीं की परीक्षा पास की। अब वे ग्यारहवीं कक्षा भी पार चुके हैं। उन्हींके लिए मिशन ने बारहवीं का पाठ्यक्रम भी शुरू कर दिया है। इसके लिए मिशन ने स्वाध्ययन सामग्रियों का प्रस्ताव रखा जिसका अनुमोदन हुआ। इन सामग्रियों के निर्माण का नेतृत्व राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने किया, जिसपर मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है। बुजुर्गों की अध्ययन-क्षमता को ध्यान में रखकर यह सामग्री तैयार की गई है। हिंदी भाषाध्ययन तथा साहित्यास्वादन को बढ़ावा देने में यह सामग्री आपके लिए लाभकारी सिद्ध होगी।

सबको मेरी हार्दिक बधाइयाँ!

डॉ. जे. प्रसाद
निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी

भारत का संविधान

भाग 4 क

नागरिकों का मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

ख) स्वतंत्रता केलिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

च) हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उनका परिरक्षण करे,

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके, और

ट) छह और चौदह साल के बीच के अपने बच्चे/बच्ची को या अपने संरक्षण में रहनेवाले बच्चे/बच्ची को उसके माता-पिता या अभिभावक तदनुकूल शिक्षा प्रदान करने का अवसर दें।

अध्येताओं से

केरल राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण ने 1998 में समतुल्य कार्यक्रम की शुरुआत की थी। इससे हज़ारों नवसाक्षर तथा औपचारिक शिक्षा से वंचित हज़ारों शिक्षार्थियों को लाभ मिला। दसवीं समतुल्य पाठ्यक्रम की परीक्षा उत्तीर्ण हज़ारों शिक्षार्थियों के लिए उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम शुरू कर दिया गया है। इसके लिए मिशन ने स्वाध्ययन सामग्रियाँ विकसित की हैं। इसमें अनुभवी अध्यापक गण और अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञों की अहम भूमिका रही है। समत्व, सामाजिक नीति, जनतंत्र का अवबोध, धर्मनिरपेक्षता आदि को बढ़ावा देना, नेतृत्वभावना पैदा करना, विचार-विनिमय की क्षमता बढ़ाना आदि इस पाठ्यक्रम के उद्देश्य हैं। मूल्यांकन, प्रमाण-पत्रों का वितरण आदि कार्य उच्चमाध्यमिक शिक्षा बोर्ड करेगा।

समतुल्य पाठ्यक्रम की दसवीं परीक्षा में उत्तीर्ण शिक्षार्थी तथा औपचारिक रूप से दसवीं की परीक्षा में उत्तीर्ण शिक्षार्थी, जिनकी आयु 22 के ऊपर है, इसमें शामिल हो गये अब वे बारहवीं कक्षा में पहुँच चुके हैं। यह पुस्तिका उनके लिए हैं।

स्वाध्ययन सामग्रियों के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लिए अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र के विशेषज्ञ, उच्चमाध्यमिक तथा महाविद्यालयों के अध्यापक, अन्य अधिकारी आदि के प्रति आभार प्रकट कर रहा हूँ। संपर्क कक्षाओं का नेतृत्व करनेवाले अध्यापक बंधु तथा अन्य साथियों को हार्दिक बधाइयाँ।

डॉ.पी.एस.श्रीकला
निदेशक
राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण

HIGHER SECONDARY EQUIVALENCY COURSE

Std XII (Hindi)

Self Learning Materials Prepared by

Teachers : **Dr. P. Pramod**
HSST Hindi, DBHSS, Thakazhy, Alappuzha

: **Sreekumaran B**
HSST Hindi, Govt HSS, Parambil, Kozhikode

: **Smitha.SL**
HSST Hindi, Govt Tamil HSS, Chalai, Tvpm

: **Dr. N.I. Sudheeshkumar**
HSST Hindi, BNVV&HSS, Thiruvallam, Tvpm

: **Dr. D. Binu**
HSST Hindi, Govt HSS, Mangad, Kollam

: **Sudhakaran Pillai.B**
HSST Hindi, GG HSS, Thazhava, Kollam

Expert : **Dr. B. Asok**
Head, Department of Hindi,
Govt. College, Chittoor

Artist : **C.Rajendran**
AVGB HS Thazhava, Kollam

Academic Co-ordinator : **Dr. Rekha R Nair**
Research Officer, SCERT

Co-ordination : **K. Ayyappan Nair**
Assistant Director (Equivalency & Academic)
State Literacy Mission Authority

Co-ordination Assistance : **Riyana Anzari**, *Programme Officer KSLMA*
: **Beena A.R**, *Programme Officer KSLMA*
: **M.M, Sharafudeen**, *Programme Officer KSLMA*

Kerala State Literacy Mission Authority (KSLMA)
State Council of Educational Research and Training (SCERT), Kerala
2016

अनुक्रमणिका

- मेरी वसीयत 9-18
  जवाहरलाल नेहरू
- हाइकू 19-24
  डॉ. एस. डी तिवारी
- पेड़ की पीड़ा 25-34
  कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
- पारिभाषिक शब्दावली 35-38
- स्त्री का सोचना एकांत है..... 39-44
  कात्यायनी
- शेर 45-54
  असगर वजाहत
- बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता..... 55-61
  राजेश जोशी
- मुर्दहिया 62-70
  डॉ. तुलसीराम
- एक टैंक 71-77
  ज्ञानेंद्रपति
- परिशिष्ट 78-81

देखें, पहचानें...

- आमुख
- प्रवेश-कार्य
- अधिगम उपलब्धियाँ
- प्रसंगार्थ
- अनुवर्ती कार्य
- सूचनात्मक वाचन
- विश्लेषणात्मक वाचन
- सारांश
- निर्धारण के प्रश्न
- सूचनात्मक प्रश्नों के उत्तर
- विश्लेषणात्मक प्रश्नों के उत्तर
- लेखक परिचय
- स्वनिर्धारण

1

अधिगम उपलब्धियाँ

- निबंध का आशय ग्रहण करके विधांतरण करता है।
- निबंध का विश्लेषण करके टिप्पणी प्रस्तुत करता है।

मिट्टी से सोना उपजाता
कहलाता जो अन्न का दाता
धूप, ठंड हो चाहे बारिश
जिसको कोई रोक न पाता

यहाँ किसान की महिमा का वर्णन किया गया है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू अपने लेख में भारत की मिट्टी एवं किसान के प्रति अपना आदर प्रकट करते हैं। पढ़ें, मेरी वसीयत।

मेरी वसीयत

निबंध

मुझे देश की जनता ने, मेरे हिंदुस्तानी भाइयों और बहनों ने इतना प्रेम और मुहब्बत दी है कि चाहे मैं जितना कुछ करूँ वह उसके एक छोटे से छोटे हिस्से का बदला नहीं हो सकता। सच तो यह है कि प्रेम इतनी कीमती चीज है कि इसके बदले कुछ देना मुमकिन नहीं है। इस दुनिया में बहुत से लोग हुए जिनको अच्छा समझकर, बड़ा मानकर, उनका आदर किया गया, पूजा गया... लेकिन भारत के लोगों ने छोटे और बड़े, अमीर और गरीब, सब तबकों के बहनों और भाइयों ने मुझे इतना ज्यादा प्यार दिया है कि उसका बयान करना मेरे लिए मुश्किल है और जिससे मैं दब गया। मैं आशा करता हूँ कि मैं अपने जीवन के बाकी वर्षों में अपने देशवासियों की सेवा करता रहूँ और उनके प्रेम के योग्य रहूँ।

बेशुमार दोस्तों और साथियों के ऊपर और भी ज्यादा एहसानात है। हम बड़े-बड़े कामों में एक दूसरे के साथ रहे, शरीक रहे, हमने मिलजुल-कर काम किए। यह तो होता ही है कि जब बड़े काम किए जाते हैं, उनमें सफलता भी होती है, नाकामयाबी भी होती है। मगर हम सब शरीक रहे, सफलता की खुशी में और नाकामयाबी के दुःख में भी...।

मैं चाहता हूँ, और मन से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रस्में न अदा की जायें। मैं, ऐसी बातों को मानता नहीं हूँ और सिर्फ रस्म समझकर इनमें बँध जाना धोखे में पड़ना मानता हूँ। जब मैं मर जाऊँ तो मेरी इच्छा है कि मेरा दाह-संस्कार कर दिया जाय। अगर मैं विदेश में मरूँ तो मेरे शरीर को जला दिया जाए और मेरी अस्थियाँ इलाहाबाद

भेज दी जाएँ। इनमें से मुट्ठी भर गंगा में डाल दी जाएँ और उनके बड़े हिस्से के साथ क्या किया जाय, मैं आगे बता रहा हूँ। इनका कुछ भी हिस्सा किसी हालत में बचाकर न रखा जाए।

गंगा में अस्थियों का कुछ हिस्सा डलवाने की इच्छा के पीछे, जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, कोई धार्मिक ख्याल नहीं है। इस बारे में मेरी कोई धार्मिक भावना नहीं है। मुझे बचपन से गंगा और जमुना से लगाव रहा है और जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, वह लगाव बढ़ता रहा। मैंने मौसमों के बदलने के साथ इनके बदलते हुए रंग और रूप को देखा है, और कई बार मुझे याद आई उस इतिहास की, उन परंपराओं की, उन पौराणिक गाथाओं की, उन गीतों और कहानियों की, जोकि कई युगों से उनके साथ जुड़ी है और उनके बहते हुए पानी में घुल-मिल गई हैं।

गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है, जनता की प्रिय है, उससे भारत की जातियाँ, स्मृतियाँ, उसकी आशाएँ और उसके भय, विजयगान, उसकी विजय और पराजय लिपटी हुई है। गंगा तो भारत की सभ्यता का प्रतीक रही है, निशान रही है, सदा बदलती, सदा बहती, फिर बही गंगा की गंगा। वह मुझे याद दिलाती है कि हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों की और गहरी घाटियों की, जिनसे मुझे मुहब्बत रही है और उनके नीचे उपजाऊ और दूर-दूर तक फैले मैदान जहाँ काम करते मेरी जिंदगी गुजरी है। मैंने सुबह की रोशनी में गंगा को मुस्कराते, उछलते-कूदते देखा है, और देखा है शाम के साये में उदास, काली-सी चादर ओढ़े हुए, भेद भरी, जाड़ों में सिमटी सी, आहिस्ते-आहिस्ते बहती सुंदर धारा और बरसात में दहाड़ती, गरजती हुई, समुद्र की तरह चौड़ा सीना लिये और सागर को बरबाद करने की शक्ति लिए हुए। यही गंगा मेरे लिए निशानी है भारत की प्राचीनता की, यादगार की, जो बहती आई है वर्तमान तक

और बहती चली जा रही है, भविष्य के महासागर की ओर। भले ही मैंने पुरानी परंपराओं, रीति और रस्मों को छोड़ दिया हो, और मैं चाहता भी हूँ कि हिंदुस्थान इन सब जंजीरों को तोड़ दे जिनमें वह जकड़ा है, जो उसको आगे बढ़ने से रोकती है और जो देश में रहने वालों में फूट डालती है जो बेशुमार लोगों को दबाए रखती हैं और जो शरीर आत्मा के विकास को रोकती है। चाहे यह सब मैं चाहता हूँ, फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि मैं अपने को इन पुरानी बातों से बिलकुल अलग कर लूँ। मुझे गर्व है इस शानदार उत्तराधिकार का, इस विरासत का, जो हमारी रही है और हमारी है और मुझे यह अच्छी तरह से मालूम है कि मैं भी, हम सभी की तरह, इस जंजीर की एक कड़ी हूँ जो कि कभी नहीं और कहीं नहीं टूटी है और जिसका सिलसिला हिंदुस्थान के अतीत इतिहास के प्रारंभ से चला आता है। यह सिलसिला मैं कभी नहीं तोड़ सकता, क्योंकि मैं उसकी बेहद कद्र करता हूँ, और इससे मुझे प्रेरणा, हिम्मत और हौसला मिलता है। मेरी इस आकांक्षा की पुष्टि के लिए और भारत की संस्कृति को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए मैं यह दरख्वास्त करता हूँ कि मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहबाद के पास गंगा में डाल दी जाए, जिससे कि वह उस महासागर में पहुँचे जो हिंदुस्थान को घेरे हुए है।

मेरी भस्म के बाकी हिस्से का क्या किया जाए? मैं चाहता हूँ कि इसे हवाई जहाज में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए उन खेतों पर, जहाँ भारत के किसान मेहनत करते हैं ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाए और उसीका अंग बन जाए।

नए शब्द

मुहब्बत	-	प्यार
हिस्सा	-	भाग, अंश
मुमकिन	-	असंभव
बयान	-	वर्णन
बेशुमार	-	असंख्य
एहसानात	-	कृतज्ञता
नाकामयाबी	-	असफलता
रस्में	-	रीति-रिवाज़
मुट्ठी भर	-	थोड़ा
हालत	-	दशा
तालुक	-	रिश्ता
मौसम	-	season
सभ्यता	-	civilization
निशान	-	symbol
बर्फ	-	ओस, ice
चोटी	-	पर्वत का शिखर
घाटी	-	पर्वता का निचला भाग
रोशनी	-	प्रकाश
चादर	-	ओढ़ने का कपड़ा
जाड़ा	-	ठंडा
सिमटी-सी	-	shrink

आहिस्ते	-	धीरे	विरासत	-	परंपरा
दहाड़ती	-	गरजती	सिलसिला	-	परंपरा
चौड़ा	-	broad	बेहद	-	बहुत
बरबाद करना	-	नाश करना	कद्र	-	आदर
जंजीर	-	श्रृंखला	संस्कृति	-	culture
शानदार	-	गौरवपूर्ण	दरख्वास्त करना	-	विनती करना
उत्तराधिकार	-	succession	हवाई जहाज़	-	विमान

अनुवर्ती कार्य

सूचनात्मक वाचन

- निबंध के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।

1. भारत की जनता ने नेहरू को क्या दिया?
2. नेहरू किसकी आशा करते हैं?
3. विदेश में मरें तो नेहरू की इच्छा क्या है?
4. अस्थियों का कुछ भाग गंगा में डालने की नेहरू की इच्छा का क्या कारण है?
5. गंगा किसका प्रतीक है?
6. नेहरू को किसपर गर्व है?
7. नेहरू क्या चाहते हैं?

विश्लेषणात्मक वाचन

- इन प्रश्नों के आधार पर निबंध का विश्लेषण करें।

1. प्रेम कीमती चीज़ है, क्यों?
2. नेहरू पुरानी परंपराओं को क्यों तोड़ना चाहते हैं?
3. नेहरू अपनी भस्म भारत की ज़मीन में बिखेर देना क्यों चाहते हैं?

निबंध का सारांश

मेरी वसीयत में देश और उसकी मिट्टी के प्रति जवाहरलाल जी का असीम अनुराग प्रकट हुआ है। गंगा-यमुना के प्रति उनका प्यार असीम है। वे वसीयत करते हैं कि मरने के बाद अपनी भस्म को हवाई जहाज़ से भारत के खेतों पर बिखरा दिया जाय। इस तरह वे जिस मिट्टी में जन्मे थे उसीमें मिल जाएँगे। इसमें नेहरू ने भारत की शानदार सांस्कृतिक विरासत की चर्चा की है। लेकिन वे पुरानी अंधी मान्यताओं और रूढ़ियों से अलग होने का आग्रह करते हैं। इस रचना में देश के प्रति उनका अटूट प्रेम दृष्टिगत होता है।

निर्धारण के प्रश्न

1. मान लें नेहरूजी का 'मेरी वसीयत' पढ़कर दो मित्र नेहरू की अंतिम इच्छाओं के बारे में बातचीत करते हैं। वह बातचीत लिखें।
   - भारत की जनता का प्यार
   - पुरानी परंपराओं को तोड़ने की इच्छा
   - भारत की संस्कृति पर गर्व।
   - अस्थियों का हिस्सा गंगा में बहाना।
   - भस्म खेतों में बिखराना
2. मान लें, नेहरूजी के देश-प्रेम के बारे में आप अपने मित्र के नाम पत्र लिखते हैं। मेरी वसीयत के आधार पर वह पत्र तैयार करें और पोर्ट-फोलियो में संकलित करें।
   - जनता के प्रति प्यार
   - देश के प्रति आदर
   - अंतिम इच्छा

अपनी परख

- पत्र की रूपरेखा
- नेहरू के देश-प्रेम का वर्णन (पत्र की विषय वस्तु)
- उचित भाषा-शैली

उत्तर-सूचक

सूचनात्मक वाचन

1. प्यार
2. जीवन के बाकी वर्षों में अपने देशवासियों की सेवा करें और उनके प्रेम के योग्य रहें।
3. अपने शरीर को जला दिया जाए और अस्थियाँ इलाहाबाद में भेज दी जाएँ।
4. बचपन से नेहरू को गंगा से बहुत अधिक लगाव है।
5. गंगा भारत की सभ्यता का प्रतीक है।
6. नेहरू को भारत के शानदार उत्तराधिकार और विरासत पर गर्व है।
7. अपनी भस्म को भारत के खेतों पर बिखेर दिया जाना चाहते हैं।

विश्लेषणात्मक वाचन

1. प्रेम के सामने दुनिया के सबकुछ बेकार है।
2. देश की प्रगति में बाधा न पहुँचे।
3. भारत की मिट्टी का अंश बनकर मेहनती किसान के प्रति अपना सम्मान एवं प्यार प्रकट करने के लिए।

लेखक परिचय

जिन महापुरुषों ने देश की आजादी केलिए बहुत कुछ किया है, जवाहरलाल नेहरू उनके सिरमौर हैं। उनका जन्म इलाहाबाद में 14 नंवबर 1889 ई. को हुआ था। वे वर्षों देश के प्रधानमंत्री रहे। उनकी निधन तिथि 27 मई 1964 है। वे न केवल कुशल राजनेता थे, अपितु सशक्त लेखक भी।

'डिसकवरी आफ इण्डिया', आन आटोबायग्राफी आदि उनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। उन्होंने हिंदी में भी थोड़ा-बहुत लिखा था।

स्वनिर्धारण

- इस पाठ-भाग के अध्ययन से आप क्या पा सके? बक्स पर ✓ चिह्न लगाएँ।

  - निबंध का आशय ग्रहण कर सका/सकी ☐
  - निबंध का विश्लेषण कर सका/सकी ☐
  - निबंध के आशय का विधांतरण कर सका/सकी ☐
  - देश-प्रेमी बने रहने का महत्व समझ सका/सकी ☐

2

अधिगम उपलब्धियाँ

- हाइकू कविता का सामान्य परिचय पाकर आस्वादन टिप्पणी लिखता है।
- हाइकू कविता की शैली पहचानकर उसकी व्याख्या करता है।

"देखन को छोटा लगै, घाव करै गंभीर।"

तीर देखने में छोटा ही होता है, तो भी वह गहरी चोट पैदा कर सकता है।

एक सफल कलाकार अपनी अनुभूतियों को कम से कम अक्षरों में पाठकों को समर्पित करता है। लघु कविता हाइकू जापानी संस्कृति की उपज है। अब हिंदी की कुछ हाइकुओं का आस्वादन करें...

हाइकू

कविता

नदी लापता
बरसात का अभी
पता भी नहीं

बीत जाती है
मोमबत्ती की रात
आँसुओं में ही

फूलों के आगे
भौंरा भुनभुनाता
अपनी व्यथा

महक उठी
हाइकू फुलवारी
शब्दों के फूल

पत्थर नहीं
ख्वाबों से भी बनता
ताजमहल

प्रसंगार्थ

लापता - जिसका पता नहीं हो
महक उठी - सुगंधित हो गई
बरसात - वर्षा
फुलवारी - बगीचा
भुनभुनाना - गुनगुनाना, गुँजार करना
ख्वाब - सपना, स्वप्न
व्यथा - दुख

अनुवर्ती कार्य

सूचनात्मक वाचन

- इन प्रश्नों के उत्तर लिखें -

1. नदी क्यों लापता है?
2. मोमबत्ती की रात कैसे बीत जाती है?
3. भौंरा किसको अपनी व्यथा सुनाता है?
4. शब्दों के फूल से क्या महक उठी?
5. ताजमहल कैसे बनता?

विश्लेषणात्मक वाचन

- प्रत्येक हाइकू का विश्लेषण करें और उत्तर लिखें -

1. बरसात का पता नहीं, क्यों?
2. मोमबत्ती की रात आँसुओं में - इसका मतलब क्या है?
3. भौंरा फूलों के आगे अपनी व्यथा क्यों सुनाता है?
4. हाइकू को फुलवारी क्यों मानते हैं?
5. ख्वाबों का ताजमहल से क्या तात्पर्य है?

हाइकू का सारांश

1. बारिश के अभाव में सूख जानेवाली नदी की हालत का वर्णन इसमें मिलता है। नदी लापता है, यानी जल के अभाव में मृतप्राय नदी अब सूखकर गायब हो गई है। अभी वर्षा होने की संभावना भी नहीं। धरती की हरियाली नष्ट करनेवाले मनुष्य की ओर भी संकेत मिलता है।
2. अभावपूर्ण जीवन बितानेवाले लोगों की हालत मोमबत्ती के समान है। एस.डी. तिवारी ने इस हाइकू में पीड़ितों की हालत का मार्मिक वर्णन किया है। मोमबत्ती की रात आँसुओं में ही बीत जाती है। मोमबत्ती रात भर जलकर स्वयं नष्ट हो जाती है, तब भी दुनिया में प्रकाश फैलाता है।
3. प्रेम पीड़ा पहुँचानेवाला है। परंतु वही पीड़ा प्रेम की कसौटी है। अपने प्रेम में भौंरा फूलों के सामने अपना सर्वस्व (अहं) नष्ट करता है और फिर सब कुछ प्राप्त करता है।
4. शब्दों के फूलों के द्‌वारा हाइकू रूपी फुलवारी महक उठी। हाइकू वास्तव में बगीचे के समान है। उसका हर शब्द फूलों के समान सुगंध फैलानेवाला है। 'गागर में सागर' भरकर पाठकों को प्रभावित करनेवाली हाइकू फुलवारी के समान आकर्षक भी है।
5. ताजमहल, पत्थर (संगमरमर) से नहीं बना है, मगर सपनों से बना है। ताजमहल कभी निर्जीव पत्थर का स्मारक नहीं कहा जायेगा वह प्रेम और धड़कते हृदय का जीता स्मारक कहलाएगा।

निर्धारण के प्रश्न

1. प्रत्येक हाइकू की आस्वादन-टिप्पणी लिखें -

अपनी परख

- कवि एवं हाइकू का परिचय
- हाइकू का आशय और विश्लेषण
- अपना दृष्टिकोण

उत्तर-सूचक

सूचनात्मक वाचन

1. बरसात के अभाव में।
2. मोमबत्ती की रात आँसुओं में बीत जाती है।
3. भौंरा फूलों को अपनी व्यथा सुनाता है।
4. हाइकू-रूपी फुलवारी के फूल हैं।
5. ताजमहल सपनों से बनता है।

विश्लेषणात्मक वाचन

1. मनुष्य द्वारा प्रकृति शोषण से।
2. मोमबत्ती अपने शरीर को गलाकर रात में प्रकाश फैलाती है। रात भर गल गलकर वह स्वयं मिट जाती है।
3. भौंरा का सहारा फूल है।
4. हाइकू के प्रत्येक शब्द फूलों के समान सुंदर है और ज्ञान की सुगंध फैलानेवाला है। इसलिए हाइकू फुलवारी के समान है।
5. ताजमहल प्रेम का स्मारक है। उसे पत्थर का स्मारक कहना उचित नहीं। प्रेमी-प्रेमिकाएँ अपने मन में ताजमहल बनाते हैं। वह तो ख्वाबों का (सपनों का) ताजमहल है।

कवि परिचय

डॉ. एस. डी तिवारी आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वे दिल्ली में रहते हैं। उन्होंने एक प्रतिष्ठित कंपनि के मानव संसाधन और सामग्री प्रबंधन का कार्यभार संभाला है। कविता लिखने की उनकी रुचि बेजोड है। उन्हें नए नए स्थानों में सफर करने की शौक थी। माँ गंगा, बाँट डालो, नानी का घर, आया बसंत, ऊर्मिला का विरह, जिंदगी है बहता पानी, हिंदी हाइकू, हाइकू-शराब आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।

स्वनिर्धारण

☐ इस पाठ-भाग के अध्ययन से आप क्या पा सके? बक्स पर चिह्न लगाएँ।

- हाइकू का सामान्य परिचय पा सका/सकी ☐
- हाइकू के आशय का विश्लेषण कर सका/सकी ☐
- हाइकू का आस्वादन कर सका/सकी ☐

3

अधिगम उपलब्धियाँ

- स्वातंत्र्योत्तर कहानी का आशय ग्रहण करके शैली पहचानता है।
- कहानी के आशय का विश्लेषण करके विधांतरण करता है।

कड़ी धूप है जलते पाँव
होते पेड़ तो मिलते छाव

पेड़ यात्रियों की थकावट दूर करता है।
उस पेड़ की संवेदनाएँ क्या-क्या होंगी?
पढ़ें कहानी, पेड़ की पीड़ा।

पेड़ की पीड़ा

कहानी

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

यात्री धूप में दूर से चला आ रहा था। गरमी में झुलसा, प्यास से अधमरा और लंबी यात्रा से थका-माँदा। जाने कैसे मनहूस रास्ते पर वह आज चढ़ चला कि न कहीं कोई कुआँ मिला, न छाया, न पड़ाव और न सहयात्री ही कि संकट सहल होता।

यात्री को लगा कि वह अब घड़ी-दो-घड़ी में ही गिर जाएगा और आकाश से मँडराते चील-गिद्ध उसे जीते-जी नोच खाएँगे।

भय उसके मन के चारों ओर कुछ ऐसा छा गया कि चलते-चलते भी उसे लगा कि वह गिर गया है और गिद्ध उसे नोच रहे हैं।

भयविह्वल हो, उसने ऊपर को मुँह उठाया, तो उसे सामने मोड़ पर ही एक हरा-भरा विशाल वटवृक्ष दिखाई दिया।

उसमें नया जीवन आ गया और उसके गिरते पैर, उचककर उसे वटवृक्ष की छाया तक ले आए।

वटवृक्ष के नीचे घनी छाया ही न थी; शीतल जल का स्रोत भी था। पानी पीकर प्राणों में प्राण आए और पैर पसारकर उसने एक झपकी ली, तो पैरों ने बल पकड़ा। सूर्य ढलाव पर आया, धूप हल्की पड़ी, वह उठकर चलने को खड़ा हुआ।

पेड़ को थपथपाकर उसने कहा - "तुम्हारी कृपा का ऋण मुझपर आजन्म रहेगा; सचमुच आज तुम्हारी गोद न मिलती तो मैं जीवित न रहता।"

पेड़ ने कहा - "ठीक है, मैं भी तुम्हें पाकर जी उठा हूँ, धूप और थकान से तुम्हारी जो गति हो रही थी, वही मेरी इन सुनसान इकलेपन से। मुझे यह संसार, अब तुम्हें पाकर बसा हुआ दीखने लगा है।"

"तब तो तुम मुझे बहुत याद करोगे पीछे?" यात्री ने कहा, तो सहमकर पेड़ ने पूछा - "क्या तुम जा रहे हो कहीं और?"

"हाँ, मैं तो यात्री हूँ और मेरी मंजिल अभी दूर है।" सुनकर पेड़ के आँसू उमड़ आए और यात्री को लिपटते हुए-से उसने कहा - "ना, ना, मैं भला तुम्हें कैसे जाने दे सकता हूँ।"

यात्री हँस पड़ा ज़ोर से और तब उसने कहा - "मेरे भोले भाई, जो कहीं मार्ग में रुक जाए, तो वह यात्री कैसा? हाँ, यह हो सकता है कि तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें अपने घर अपने बड़े भाई की तरह रखूँगा और तुम्हें ज़रा भी कष्ट न होगा वहाँ।"

"मैं कैसे जा सकता हूँ कहीं; तुम देखते नहीं कि मैं पेड़ हूँ।"

"और मैं कैसे ठहर सकता हूँ कहीं; तुम देखते नहीं कि मैं एक यात्री हूँ।"

पेड़ ने कोई उत्तर नहीं दिया, तो यात्री ने एक पैर आगे बढ़ाया और अत्यंत कोमलता से पेड़ की ओर देखा।

पेड़ क्रोध से काँप रहा था।

बहुत ही कड़वे होकर उसने कहा - "भूल गए तुम कृतघ्न, कि मैं तुम्हें अपनी छाया न देता, तो कभी के मर गए होते।"

भीतर तक मीठे होकर यात्री ने कहा - "मैं उस कृपा को कैसे भूल सकता हूँ भाई! विश्वास रखो, मैं जहाँ भी रहूँगा, तुम्हारा यश गाऊँगा।"

कहीं दूर से आशा की एक किरण-सी पाकर पेड़ ने कहा - "मुझे यश की नहीं, तुम्हारी ज़रूरत है, गालियाँ ही चाहे देते रहो, पर मेरे पास रहो।"

यात्री ने कहा - "तुम पेड़ हो और न चलना तुम्हारी विवशता है। मैं यात्री हूँ और न रुकना मेरी विवशता है।"

और यात्री चल पड़ा; चलता ही गया। पेड़ खड़ा सोचता रहा - 'मैंने उसे नाश से बचाया, क्या यही मुझे उसका बदला मिला? कैसी रूखी है यह दुनिया!'

यात्री चलते-चलते सोचता रहा - "मैं पथ के आश्रयों को यों पकड़कर बैठा रहता, तो यहीं तक कैसे आता भला।"

पेड़ अपनी जगह खड़ा ही रहा।

यात्री अपनी राह चलता गया।

प्रसंगार्थ

गर्मी में झुलसा - मुरझाया

अधमरा - आधा मरा हुआ

थका-माँदा - क्षीणित

मनहूस - अशुभ

पड़ाव - a halting place

संकट - विपत्ति

सहला लेना - हल्का होना

मंडराना - चक्कर लगाना, to hang around

उचककर - to stand up on tip-toe

पैरों ने बल पकड़ा - थकान दूर हुआ

झपकी - a short sleep

सूर्य ढलाव पर आया - सूर्य का अस्त होने लगा

थपथपाना - to pat and tap lovingly

सुनसान - lonely, desorted

इकलेपन - अकेलापन

सहमकर - to be nervous

मंजिल - लक्ष्य, aim

उमड़ आना - to overflow

लिपटना - to be embraced

विवशता - परेशानी

रूखी - निरर्थक

अनुवर्ती कार्य

सूचनात्मक वाचन

- कहानी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।

1. यात्री धूप में कैसे आ रहा था?
2. ऊपर की ओर मुँह उठाने पर यात्री को क्या दिखाई दिया?
3. वटवृक्ष के नीचे क्या-क्या थी?
4. यात्री के प्राणों में प्राण कब आ गए?
5. यात्री उठकर चलने को खड़ा हुआ। कब?
6. पेड़ की विवशता क्या है?
7. यात्री की विवशता क्या है?

विश्लेषणात्मक वाचन

- इन प्रश्नों के आधार पर कहानी का विश्लेषण करें।

'1. यात्री की आशंकाएँ क्या थीं?

2. यात्री के पैरों ने बल पकड़ा। कैसे?

3. पेड़ के आँसू क्यों उमड़ आए?

कहानी का सारांश

एक दिन कोई यात्री दूर से थका-माँदा चला आ रहा था। रास्ते में उसे कोई कुआँ या छाया दिखाई न दिया। उसे कहीं गिर जाने का डर भी था। अचानक उसे एक वटवृक्ष दिखाई दिया। वटवृक्ष के नीचे घनी छाया के साथ साथ जल का स्रोत भी था। थकान दूर करने के बाद वह उठकर चलने को खड़ा हुआ। यात्री का जाना पेड़ को अच्छा न लगा। यात्री पेड़ को अपने साथ ले जाना चाहता है। लेकिन वह जा नहीं सकता। आखिर पेड़ है। यात्री जाने लगा तो उसकी कृतघ्नता पर पेड़ को बड़ा क्रोध आया। यात्री पेड़ का यश गाने की बात करता है। लेकिन पेड़ को यात्री की ज़रूरत है। आखिर यात्री चला गया। लेकिन पेड़ दुनिया की निरर्थकता के बारे में सोचता है।

निर्धारण के प्रश्न

वार्तालाप-लेखन

- धूप में दूर से आए यात्री विशाल वटवृक्ष की छाया में पहुँचा। इस प्रसंग में दोनों के बीच के संभावित वार्तालाप लिखें।
  - थके यात्री को निमंत्रण।
  - यात्री की विवशता।
  - पेड़ का सहारा लेना।

अपनी परख

- उचित शुरुआत
- प्रसंगानुकूल अभिव्यक्ति
- प्रश्नोत्तर शैली
- सही समाप्ति

- थकान दूर होने पर यात्री पेड़ के नीचे से चला जाता है। घर जाकर वह अपनी डायरी लिखता है। वह डायरी तैयार करें। (थका-माँदा यात्री का आना - विशाल वटवृक्ष दिखाई देना - पेड़ के नीचे आराम करना - दोनों के बीच बातें होना - थकान दूर होने पर यात्री का चला जाना)

अपनी परख

- मुख्य घटनाओं का उल्लेख
- डायरी की रूपरेखा
- स्वानुभव की अभिव्यक्ति
- आत्मनिष्ठ भाषा-शैली

उत्तर-सूचक

सूचनात्मक वाचन

1. गर्मी में झुलसा, प्यास से अधमरा और लंबी यात्रा से थका-माँदा यात्री चला आ रहा था।
2. ऊपर की ओर मुँह उठाने पर यात्री को एक हरा-भरा विशाल वटवृक्ष दिखाई दिया।
3. वटवृक्ष के नीचे घनी छाया ही न थी, शीतल जल का स्रोत भी था।
4. पानी पीने पर यात्री के प्राणों में प्राण आ गए।
5. जब सूर्य ढलाव पर आया और धूप हल्की पड़ी, यात्री उठकर चलने को खड़ा हुआ।
6. न चलना पेड़ की विवशता है।
7. न रुकना यात्री की विवशता है।

विश्लेषणात्मक वाचन

1. यात्री की आशंकाएँ थीं कि वह अब घड़ी-दो-घड़ी में ही गिर जाएगा और आकाश से मँडराते चील-गिद्ध उसे जीते-जी नोच खाएँगे।
2. पानी पीकर प्राणों में प्राण आए और पैर पसारकर उसने एक झपकी ली और यात्री के पैरों ने बल पकड़ा।
3. जब यात्री ने कहा कि "मैं तो यात्री हूँ और मेरी मंज़िल अभी दूर है" तब पेड़ के आँसू उमड़ आए।

लेखक-परिचय

श्री कन्हैयालाल मिश्र का जन्म 29 मई 1906 को उत्तरप्रदेश के सहरानपुर जिले के देवबंद गाँव में हुआ था। साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में वे मशहूर थे। कवि, निबंधकार रिपोर्ताज लेखक, लघुकथा लेखक, संस्मरण लेखक, पत्रकार और जीवनी लेखक के रूप में वे विख्यात हैं। उन्होंने विकास, ज्ञानोदय और नया जीवन आदि पत्रिकाओं का संपादन किया। सन 1990 में आप पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित हुए। 9 मई 1995 को उनका निधन हुआ।

आपकी प्रसिद्ध कृतियों में 'भूले हुए चेहरे' (रेखाचित्र) 'दीप जले शंख बजे' (संस्मरण) और 'क्षण बोले : कठा मुस्काये' (रिपोर्ताज) उल्लेखनीय हैं।

स्वनिर्धारण

- इस पाठ-भाग के अध्ययन से आप क्या पा सके? बक्स पर ✓ चिह्न लगाएँ।

  - कहानी का आशय ग्रहण कर सका/सकी। ☐
  - कहानी का विश्लेषण कर सका/सकी। ☐
  - कहानी के विविध प्रसंगों का विधांतरण कर सका/सकी। ☐

4

अधिगम उपलब्धियाँ

- हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का सामान्य परिचय पाता है और उनका प्रयोग करता है।

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है और संविधान की मान्यता प्राप्त राजभाषा भी है। पूरे भारत को संपर्क में लानेवाली भाषा है हिंदी। भारत के सभी केंद्र सरकारी और अद्‌र्ध सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग होता है। इनमें जनता से सीधा संपर्क लानेवाले कार्यालय हैं बैंक कार्यालय।

बैंक का एक प्रसंग देखें....

बैंक में...

पारिभाषिक शब्दावली

सहायक : आप क्या सेवा चाहते हैं?

रोषन : जी, मुझे एक खाता खोलना है।
आप चौथी नंबर काउंटर के लिपिक से मिलिए।

लिपिक : बताइए।

रोषन : जी, खाता खोलना है।

लिपिक : बैठिए। आप कौन-सा खाता खोलना चाहते हैं?

रोषन : जी, बचत खाता। मैं उडीसा का रहनेवाला हूँ। अब यहाँ नौकरी के खातिर आया हूँ।

लिपिक : आप कब से यहाँ हैं?

रोषन : पिछले दो माहों से।

लिपिक : ठीक है। यह आवेदन-पत्र भरिए। हाँ आप के किसी पहचान-पत्र की प्रतिलिपि चाहिए। दो फोटो भी।

रोषन : जी, यह भरकर कल मैं लाऊँगा।

लिपिक : अच्छा।

अनुवर्ती कार्य

1. बातचीत पढ़ी है न ? अब बातचीत में से पारिभाषिक शब्दों को पहचानकर लिखें।
   (पारिभाषिक शब्द विशेष अर्थ रखनेवाले शब्द हैं।)

2. चुने गए पारिभाषिक शब्दों के समानार्थी अंग्रेजी शब्द पहचानें।

खाता	-	Account
बचत खाता	-	Saving's Account
चालू खाता	-	Current Account
आवेदन पत्र	-	Application letter
प्रतिलिपि	-	Copy

3. बैंक संबंधी कुछ अन्य परिभाषिक शब्दों से परिचय पाएँ।

Manager	-	प्रबंधक
Official language officer	-	राजभाषा अधिकारी
Cashier	-	रोकड़िया
Translator	-	अनुवादक
Enquiory	-	पूछताछ
Pay in slip	-	जमा पर्ची
Cheque	-	धनादेश
Cash	-	नकद
Depositor	-	जमाकर्ता
Amount	-	राशि
Fixed Deposit	-	स्थाई जमा
Interest	-	सूद
Demand Draft	-	माँग-पत्र
Loan	-	ऋण

निर्धारण के प्रश्न

- **सही मिलान करें।**

Demand Draft	-	प्रतिलिपि
Interest	-	चालू खाता
Current Account	-	रोकड़िया
Copy	-	जमापर्ची
Cashier	-	माँग-पत्र
Pay in slip	-	सूद

- बैंक से संबंधित अन्य पारिभाषिक शब्दों का संकलन करें और पोर्ट फॉलियो में लिखें।

स्वनिर्धारण

- इस पाठ-भाग के अध्ययन से आप क्या पा सके? बक्स पर ✓ चिह्न लगाएँ।

  - पारिभाषिक शब्दावली का सामान्य परिचय पा सका/सकी। ☐
  - पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करने की क्षमता पा सका/सकी। ☐

5

अधिगम उपलब्धियाँ

- नारीपक्ष कविता का आशय ग्रहण करता है और शैलीगत विशेषताएँ पहचानता है।
- कविता का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।

"स्त्री, पुरुष की साथिन है। वह पुरुष के समकक्ष मानसिक क्षमता रखती है। अगर तुम नैतिकता को शक्ति का मापदंड मानते हो तो स्त्री का स्थान पुरुष से भी ऊपर है.... अहिंसा को अगर हम जीवन का नियम मानें तो भविष्य स्त्रियों का है।"

- गाँधीजी

देखें, स्त्री का असली जीवन कैसा है। पढ़ें, कात्यायनी की कविता 'स्त्री का सोचना एकांत है'

स्त्री का सोचना एकांत है

कविता

चैन की एक साँस
लेने के लिए स्त्री
अपने एकांत को बुलाती है।

एकांत को छूती है स्त्री
संवाद करती है उससे।
जीती है
पीती है उसको चुपचाप।

एक दिन
वह कुछ नहीं कहती अपने एकांत से
कोई भी कोशिश नहीं करती
दुख बाँटने की
बस, सोचती है।

वह सोचती है
एकांत में
नतीजे तक पहुँचने से पहले ही
खतरनाक घोषित कर दी जाती है!

प्रसंगार्थ

चैन - सुख
साँस - Breath
छूना - स्पर्श होना
संवाद - चर्चा
चुपचाप - Quite
कोशिश - प्रयत्न
बाँटना - to distribute, वितरण करना
नतीजा - परिणाम (result)
खतरनाक - भयानक
घोषित - Announced

अनुवर्ती कार्य

सूचनात्मक वाचन

- कविता के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।
  1. स्त्री एकांत को क्यों बुलाती है?
  2. स्त्री किससे संवाद करती है?
  3. स्त्री कब खतरनाक घोषित कर दी जाती है?

विश्लेषणात्मक वाचन

1. स्त्री एकांत से संवाद करती है, क्यों?
2. स्त्री को खतरनाक क्यों घोषित कर दी जाती है?

कविता का सारांश

'स्त्री का सोचना एकांत है' आधुनिक समाज में नारी की विवशता को प्रकट करनेवाली कविता है। नारी अपने चैन के लिए एकांत को स्वीकार करती है। उसके जीवन में दुख बाँटने के लिए कोई तैयार नहीं होता, कुछ नहीं करता। नारी जीवन सफल होने से पहले ही समाज उसे खतरनाक घोषित करता है।

निर्धारण के प्रश्न

- समानार्थी आशयवाली पंक्ति चुनें।
  - निर्णय तक पहुँचने से पूर्व ही खतरनाक घोषित कर दी जाती है।
  - स्त्री सुख के लिए एकांत को बुलाती है।
- कविता की आस्वादन-टिप्पणी तैयार करें।

अपनी परख

- कवि और काव्यधारा का परिचय
- कविता का आशय और विश्लेषण
- काव्यगत विशेषताएँ
- निष्कर्ष

- आधुनिक समाज में नारी का अकेलापन - इस विषय से संबंधित अखबारों से समाचारों का संकलन करें।

उत्तर-सूचक

सूचनात्मक वाचन

1. स्त्री चैन की एक साँस लेने के लिए एकांत को बुलाती है।
2. स्त्री एकांत से संवाद करती है।
3. स्त्री के जीवन नतीजे तक पहुँचने से पहले खतरनाक घोषित कर दी जाती है।

विश्लेषणात्मक वाचन

1. स्त्री चैन की एक साँस के लिए एकांत को बुलाती है। अपने जीवन में दूसरा कोई सहारा न होने के कारण एकांत को स्वीकार करती है। वह क्षण-भर के चैन के लिए एकांत से संवाद करती है।
2. जीवन में दूसरा कोई सहारा न होने के कारण एकांत को स्वीकार करती है। उसको चुपचाप अपना जीवन बिताना पड़ता है। जन्म से मृत्यु तक नारी जीवन कष्टताओं से गुजरता है। कभी भी उसको चैन नहीं मिलती है। आखिर उसके चुपचाप सोचते रहने को भी पुरुष द्वारा खतरनाक घोषित किया जाता है।

कवि-परिचय

कात्यायनी का जन्म 9 मई 1959 को उत्तरप्रदेश के गोरखपुर में हुआ था। नारी विमर्श की कवयित्री के रूप में कात्यायनी विख्यात है। सात भाइयों के बीच चंपा, 'जादू नहीं कविता' फुटपाथ पर कुरसी, कविता की जगह आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

स्वनिर्धारण

☐ इस पाठ-भाग के अध्ययन से आप क्या पा सके?

बक्स पर ✓ चिह्न लगाएँ।

- कविता का आशय ग्रहण कर सका/सकी। ☐
- कविता का विश्लेषण कर सका/सकी। ☐
- कविता की भावगत विशेषताएँ समझ सका/सकी। ☐
- कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिख सका/सकी। ☐

6

अधिगम उपलब्धियाँ

- समकालीन कहानी का आशय ग्रहण करके शैली पहचानता है।
- कहानी के आशय का विश्लेषण करके विधांतरण करता है।

दयालुता वह भाषा है जिसे बहरे सुन सकते हैं और अंधे देख सकते हैं।

- मार्क डोयिन

आजकल समाज में मानवता कम हो रही है। अन्याय और अत्याचार बढ़ रहे हैं। पढ़ें, असगर वजाहत की कहानी 'शेर।'

शेर

कहानी

मैं तो शहर से या आदमियों से डरकर जंगल इसलिए भागा था कि मेरे सिर पर सींग निकल रहे थे और डर था कि किसी-न-किसी दिन कसाई की नज़र मुझपर ज़रूर पड़ जाएगी।

जंगल में मेरा पहला ही दिन था जब मैंने बरगद के पेड़ के नीचे एक शेर को बैठे हुए देखा। इससे पहले चूँकि चित्रों में आँखें बरगद के पेड़ के नीचे गौतम बुद्ध की देखने की आदी थीं इसलिए पहली नज़र में शेर गौतम बुद्ध नज़र आया। लेकिन शेर का मुँह खुला हुआ था। शेर का खुला मुँह देखकर मेरा जो हाल होना था, हुआ, यानी मैं डर के मारे एक झाड़ी के पीछे छिप गया।

मैंने देखा कि झाड़ी की ओट भी गजब की चीज़ है। अगर झाड़ियाँ न हों, शेर का मुँह-ही-मुँह हो और फिर उससे बच जाना बहुत कठिन हो जाए। कुछ देर के बाद मैंने देखा कि जंगल के छोटे-मोटे जानवर एक लाइन से चले आ रहे हैं, शेर के मुँह में घुसते चले जा रहे हैं। शेर बिना हिले-डुले, बिना चबाए, जानवर गटकता जा रहा है। यह दृश्य देखकर मैं बेहोश होते-होते बचा।

अगले दिन मैंने एक गधा देखा जो लँगड़ाता हुआ शेर के मुँह की तरफ जा रहा था। मुझे उसकी बेवकूफी पर सख्त गुस्सा आया और मैं उसे समझाने के लिए झाड़ी से निकलकर उसके सामने आया। मैंने उससे पूछा, 'तुम शेर के मुँह में अपनी इच्छा से क्यों जा रहे हो?'

उसने कहा, "वहाँ हरी घास का एक बहुत बड़ा मैदान है। मैं वहाँ बहुत सुख से रहूँगा और खाने के लिए खूब घास मिलेगी।"

मैंने कहा, "वह शेर का मुँह है।"

उसने कहा, "गधे, वह शेर का मुँह ज़रूर है, पर वहाँ है हरी घास का मैदान।" इतना कहकर वह शेर के मुँह के अंदर चला गया।

फिर मुझे एक लोमड़ी मिली। मैंने उससे पूछा, "तुम शेर के मुँह में क्यों जा रही हो?"

उसने कहा, "शेर के मुँह के अंदर रोज़गार का दफ़्तर है। मैं वहीं अर्जी दूँगी, फिर मुझे नौकरी मिल जाएगी।"

मैंने पूछा, "तुम्हें किसने बताया?"

उसने कहा, "शेर ने।" और वह शेर के मुँह के अंदर चली गई।

फिर एक उल्लू आता हुआ दिखाई दिया। मैंने उल्लू से वही सवाल किया।

उल्लू ने कहा, "शेर के मुँह के अंदर स्वर्ग है।"

मैंने कहा, "नहीं, यह कैसे हो सकता है?"

उल्लू बोला, "यह सच है और वही निर्वाण का एकमात्र रास्ता है।" और

उल्लू भी शेर के मुँह में चला गया।

अगले दिन मैंने कुत्तों के एक बड़े जुलूस को देखा जो कभी हँसते-गाते थे और कभी विरोध में चीखते-चिल्लाते थे। उनकी बड़ी-बड़ी लाल जीभें निकली हुई थीं, पर दुम सब दबाए थे। कुत्तों का यह जुलूस शेर के मुँह की तरफ़ बढ़ रहा था। मैंने चीखकर कुत्तों को रोकना चाहा, पर वे नहीं रुके और उन्होंने मेरी बात अनसुनी कर दी। वे सीधे शेर के मुँह में चले गए।

कुछ दिनों के बाद मैंने सुना कि शेर अहिंसा और सह-अस्तित्ववाद का बड़ा जबर्दस्त समर्थक है इसलिए जंगली जानवरों का शिकार नहीं करता। मैं सोचने लगा, शायद शेर के पेट में वे सारी चीज़ें हैं जिनके लिए लोग वहाँ जाते हैं और मैं भी एक दिन शेर के पास गया। शेर आँखें बंद किए पड़ा था और उसका स्टाफ आफिस का काम निपटा रहा था। मैंने वहाँ पूछा, "क्या सच है कि शेर साहब के पेट के अंदर रोज़गार का दफ़्तर है?"

बताया गया कि यह सच है।

मैंने पूछा, "कैसे?"

बताया गया, "सब ऐसा ही मानते हैं।"

मैंने पूछा, "क्यों? क्या प्रमाण है?"

बताया गया, "प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण है विश्वास?"

मैं ने कहा, "और यह बाहर जो रोज़गार का दफ़्तर है?"

बताया गया, "मिथ्या है।"

मैंने कहा, "तुम लोग मुझे उल्लू नहीं बना सकते। वह शेर का मुँह है। शेर के मुँह और रोज़गार दफ़्तर का अंतर मुझे मालूम है। मैं इसमें नहीं जाऊँगा।"

मेरे यह कहते ही गौतम बुद्ध की मुद्रा में बैठा शेर दहाड़ कर खड़ा हो गया और मेरी तरफ़ झपट पड़ा।

प्रसंगार्थ

सींग - गाय, बैल, हरिण आदि पशुओं के सिर के दोनों तरफ निकली हुई कड़ी और नुकीली शाखा (a horn)

कसाई - माँस बेचनेवाला व्यक्ति (a butcher)

बरगद - वटवृक्ष (a banyan tree)

हाल - दशा (condition)

झाड़ी - bush

ओट - आड़ (covering)

गजब - अनोखी बात (something very strange)

हिलना - चंचल होना

डुलना - हिलना

चबाना - दाँतों से कुचलना

गटकना - निगलना

बचना - शेष रहना

लँगड़ाना - to limp, to walk lamely

बेवकूफी - मूर्खता

सख्त गुस्सा - कठिन क्रोध

समझाना - to explain

रोज़गार का दफ़्तर- employment office

अर्जी - प्रार्थनापत्र (Application)

सवाल - प्रश्न

निर्वाण - मुक्ति

चीखना - शोर मचाना

चिल्लाना - चीखना

दुम - पूँछ

दबाना - to press down

अनसुनी - unheard

ज़बर्दस्त - मज़बूत (strong)

शिकार - मृगया (hunting)

प्रमाण - सचाई

दहाड़ करना - to roar

झपट पड़ना - वेगपूर्वक किसीकी ओर बढ़ना

अनुवर्ती कार्य

सूचनात्मक वाचन

- कहानी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।

1. मैं पात्र क्यों जंगल भागा था?
2. मैं पात्र झाड़ी के पीछे क्यों छिप गया?
3. झाड़ी में छिप कर 'मैं' ने क्या देखा?
4. गधा शेर के मुँह में किसकी प्रतीक्षा में जा रहा है?
5. शेर के मुँह के अंदर जाने के लिए लोमड़ी ने क्या तर्क उठाया?
6. उल्लू का मत क्या था?
7. शेर के मुँह में कुत्तों के जुलूस ने कैसे प्रवेश किया?
8. शेर के स्टॉफ के पास पहुँचकर मैं ने क्या प्रश्न पूछा?
9. अंत में शेर ने क्या किया?

विश्लेषणात्मक वाचन

- कहानी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।

1. शेर के मुँह के अंदर जानवरों के घुसने का दृश्य देखकर मैं पात्र क्यों चकित हुआ?
2. शेर के मुँह और रोज़गार दफ़्तर का अंतर मुझे मालूम है। मैं पात्र ने ऐसा क्यों कहा?

आलोचनात्मक वाचन

1. कहानी में शेर का मुँह किसका प्रतीक है - स्पष्ट करें।

कहानी का सारांश

हिंदी के प्रसिद्ध समकालीन कहानीकार असगर वजाहत का प्रतीकात्मक कहानी है - शेर। 'शेर' समाज में व्याप्त भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था का प्रतीक है। 'मैं' पात्र शहर से या आदमियों से डरकर जंगल भागा था। उन्होंने देखा कि गधा, लोमड़ी, उल्लू, कुत्ते आदि जानवर सुखमय जीवन की प्रतीक्षा में शेर के मुँह के अंदर जा रहे हैं। 'मैं' पात्र सचाई को पहचानकर जानवरों की मूर्खता का विरोध करता है। तब शेर दहाड़कर 'मैं' पात्र की तरफ झपटता है। जो समाज में व्याप्त भ्रष्टता का विरोध करता है उसे भ्रष्ट समाज ही अपने में समेट लेता है।

निर्धारण के प्रश्न

- कहानी के आधार पर 'शेर' और 'मैं' पात्र के बीच का संभावित वार्तालाप तैयार करें।
  - शेर की कपटता की पहचान।
  - शेर की छल पर 'मैं' का विरोध।
  - दूषित समाज पर व्यंग्य

- कहानी के आधार पर 'ढोंगी वादाओं से भ्रमित आज का मानव' विषय पर निबंध लिखें।
  - जंगल भ्रष्ट समाज का प्रतीक।
  - शेर शोषक का प्रतीक।
  - निरीह जानवर शोषितों का प्रतीक।
  - 'मैं' अन्याय का विरोध करनेवाला।

उत्तर-सूचक

सूचनात्मक वाचन

1. मैं पात्र शहर से या आदमियों से डरकर जंगल भागा था।
2. वह शेर का खुला मुँह देखकर झाड़ी के पीछे छिपा।
3. 'मैं' ने देखा कि जंगल के छोटे-मोटे जानवर एक लाइन से चले आ रहे हैं और शेर के मुँह में घुसते चले जा रहे हैं।
4. गधा शेर के मुँह में सुख और खाने के लिए खूब घास की प्रतीक्षा में जा रहा है।
5. लोमड़ी ने कहा कि शेर के मुँह के अंदर रोजगार का दफ़्तर है और वहाँ से मुझे नौकरी मिल जाएगी।
6. उल्लू का मत यह था कि निर्वाण का एकमात्र रास्ता शेर का मुँह है।
7. शेर के मुँह में कुत्तों के जुलूस ने बड़ी-बड़ी लाल जीभें निकालकर तथा दुम दबाकर प्रवेश किया था।

8. 'मैं' ने पूछा कि शेर साहब के पेट के अंदर रोज़गार का दफ़्तर है।

9. शेर ने अंत में दहाड़कर खड़ा हो गया और उसकी तरफ झपट पड़ा।

विश्लेषणात्मक वाचन

1. गधा हरी घास की और लोमड़ी नौकरी की प्रतीक्षा में, उल्लू निर्वाण का रास्ता खोजकर तथा कुत्ते दुम दबाए शेर के मुँह के अंदर जाते हैं। ये सब बेवकूफी एवं भ्रम के कारण हैं। सारे पशु विभिन्न शोषितों का प्रतीक है। यह देखकर 'मैं' पात्र चकित हुआ।

2. शेर आधुनिक भ्रष्टाचार का प्रतीक है। जो अपने अस्तित्व पर खड़ा रहता है उनको ही शोषक और उसके धोखेपन का स्पष्ट पता चलता है।

आलोचनात्मक वाचन

शेर का मुँह समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का प्रतीक है। आधुनिक समाज सुख के पीछे दौड़ता है। गधा, लोमड़ी, उल्लू और कुत्ते समाज की धोखेबाजी के शिकार हैं।

लेखक परिचय

असगर वजाहत

असगर वज़ाहत हिंदी के प्रसिद्ध समकालीन कहानीकार हैं। उनका जन्म 1946 जुलाई 5 को उत्तरप्रदेश के फतेहपुर में हुआ। वे हिंदी के प्रोफेसर तथा रचनाकार हैं। इन्होंने नाटक, कथा, उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत तथा अनुवाद के क्षेत्र में लेखनी चलाई है। वे टेलिविज़न व फिल्म लेखन और निर्देशन से भी जुड़े रहे हैं। वे 2006 में अपने उपन्यास 'कैसी आग लगाई' के लिए यू के कथा सम्मान से सम्मानित हैं।

स्वनिर्धारण

☐ इस पाठ-भाग के अध्ययन से आप क्या पा सके?

बक्स पर ✓ चिह्न लगाएँ।

- कहानी का आशय ग्रहण कर सका/सकी। ☐
- प्रश्नों के सही उत्तर लिख सका/सकी। ☐
- कहानी के आशय का विधांतरण कर सका/सकी। ☐

7

अधिगम उपलब्धियाँ

- समकालीन कविता का आशय ग्रहण करता है और शैलीगत विशेषताएँ पहचानता है।
- कविता का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।

चित्र देखें...

कैसा लगा? चित्र का आशय क्या है? पढ़ें कविता, 'बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता'

बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता

कविता

उन्होंने बनाए बहुत नीले आसमान
फिर सूरज चाँद और सितारों को
अलग अलग जगह रखा!
पेड़ इतने हरे बनाए उन्होंने
जितना हरा उन्हें होना चाहिए
या जितने हरे रहे होंगे वे
कभी हमारी धरती पर!
फिर पहाड़ों, नदियों और झरनों को
उन्होंने अलग-अलग जगह रखा!
उन्होंने मकान सड़कें और पुल भी बनाए
जिन्हें ईश्वर ने भी नहीं बनाया था कभी
फिर उन्होंने बनाई बसें, स्कूटर और कारें
साइकिल चलाते और पैदल चलते
लोग भी बनाए उन्होंने!
चीज़ों का बनाते चले जाने के उत्साह में
इतना ज्यादा भर गया चित्र
कि गेंद को रखने की कोई जगह ही
नहीं बची चित्र में
तब समझ आया उन्हें
कि बड़ों ने कैसी-कैसी गलतियाँ की हैं
इस दुनिया को बनाने में!

प्रसंगार्थ

प्रतियोगिता	- competition	झरना	- stream
आसमान	- आकाश	पुल	- bridge
सितारा	- नक्षत्र	पैदल	- onfoot
जगह	- स्थान	ज्यादा	- अधिक
धरती	- भूमि	गलती	- mistake

अनुवर्ती कार्य

सूचनात्मक वाचन

- कविता के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।

1. बच्चों ने आसमान कैसे बनाए?
2. बच्चों ने किन-किनको अलग-अलग जगह रखा?
3. बच्चों ने सबसे हरा किसको बनाया?
4. मकान, सड़कें और पुल किसने बनाए?
5. चित्र में किसको रखने की जगह नहीं थी?
6. दुनिया को बनाने में किन्होंने गलतियाँ कीं?

विश्लेषणात्मक वाचन

- कविता के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।

1. बच्चों ने अपने चित्रों में प्रत्येक वस्तु को विशेष महत्व दिया है। इसपर अपना विचार व्यक्त करें।
2. 'जिन्हें ईश्वर ने भी नहीं बनाया था कभी' - ईश्वर की सृष्टि के अभावों की पूर्ति बच्चों ने कैसे की?
3. बच्चों को कैसे मालूम हुआ कि दुनिया को बनाने में बड़ों ने गलतियाँ की हैं?

सारांश

'बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता' शीर्षक कविता नवनिर्माण के नाम पर बच्चों के खेलने की जगह तक को भी नष्ट करनेवाले मनुष्य की स्वार्थपरता का अनावरण किया है।

बच्चे अपने-अपने ढंग से धरती का चित्र बनाते हैं। आकाश को बहुत नीले और पेड़ों को बहुत हरे खींचते हैं। सूर्य और चंद्र को बनाते हैं। पहाड़ों, नदियों और झरनों को अलग-अलग जगह देते हैं। ईश्वर की सृष्टि में जो-जो कमियाँ हैं, बच्चे उनकी पूर्ति करते हैं। वे मकान, सड़कें, पुल, साइकिलवाले, स्कूटरवाले सभी कुछ बनाते हैं। उनके चित्र में ज़्यादा सामान भर जाते हैं। अंत में यह देखा जाता है कि गेंद को रखने केलिए कोई जगह नहीं बच गई है।

शहरीकरण के कारण बच्चों को खेलने की जगहें नहीं हैं। बच्चों ने अपने चित्र में बड़ों की उस गलती को पहचाना है। अर्थात बड़ों ने इस दुनिया

को बनाने में जो गलतियाँ की हैं उन्हें सुधारना मुश्किल है। इस कविता में शहरीकरण के दुष्परिणामों की ओर भी संकेत मिलता है।

निर्धारण के प्रश्न

- कविता की आस्वादन-टिप्पणी तैयार करें।

अपनी परख

- कवि और काव्यधारा का परिचय
- कविता का आशय और विश्लेषण
- काव्यगत विशेषताएँ
- निष्कर्ष

उत्तर-सूचक

सूचनात्मक वाचन

1. बच्चों ने आसमान बहुत नीले बनाए।
2. बच्चों ने सूर्य, चंद्र, तारे, पहाड़, नदी और झरनों को अलग-अलग जगह रखा।
3. बच्चों ने सबसे हरा पेड़ को बनाया।
4. बच्चों ने मकान, सड़कें और पुल बनाए।
5. चित्र में गेंद को रखने की जगह नहीं थी।
6. दुनिया को बनाने में बड़ों ने गलतियाँ की हैं।

विश्लेषणात्मक वाचन

1. बच्चों ने अपने चित्रों को आकर्षक बनाने केलिए आकाश को बहुत नीले और पेड़ों को बहुत हरे बनाए। प्रकृति में उन्होंने जो कुछ देखे सभी को स्थान दिया। सूर्य, चंद्र, तारे, पहाड़, नदी, झरना, आदि सभी को अलग-अलग स्थान दिया। उन्होंने मकान, सड़कें और फल भी बनाए।
2. सृष्टि के समय ईश्वर ने शहरीकरण के बारे में सोचा ही नहीं था। वे मकान, सड़कें और पुल नहीं बना पाए थे। बच्चों ने अपने चित्रों में सृष्टि के इन अभावों की पूर्ति की है। बच्चों ने मकान, सड़कें और पुल ही नहीं बनाए, बल्कि बसें, स्कूटर और कारें भी बनाए।
3. बच्चे भी शहरीकरण से प्रभावित हैं। इसलिए इनके चित्रों में शहरी जीवन की सभी वस्तुओं को स्थान मिला। चित्र में बहुत ज्यादा सामान भर गया। अंत में उन्हें मालूम हुआ कि गेंद को रखने की कोई जगह नहीं है। वे समझ गए कि दुनिया को बनाने में बड़ों ने बड़ी गलतियाँ की हैं।

कवि-परिचय

राजेश जोशी का जन्म 18 जुलाई 1946 को मध्यप्रदेश में हुआ। समरगाथा, एक दिन बोलेंगे पेड़, मिट्टी का चेहरा, नेपथ्य में हँसी आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। वे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हैं।

स्वनिर्धारण

- सही प्रस्ताव पर हाँ चिह्न लगाएँ।

- कविता का आशय ग्रहण कर सका/सकी। ☐
- कविता का विश्लेषण कर सका/सकी। ☐
- कविता की भावगत विशेषताएँ समझ सका/सकी। ☐
- कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिख सका/सकी। ☐

- **दलित साहित्य का सामान्य परिचय पाता है।**
- **आत्मकथा का आशय ग्रहण करके शैलीगत विशेषताएँ पहचानता है।**

हमें ऐसी शिक्षा चाहिए
जिससे चरित्र का निर्माण हो,
मन की शक्ति बढ़े,
बुद्धि का विकास हो और
मनुष्य अपने पैर पर खड़ा हो सके

-स्वामी विवेकानंद

पढ़ें, ऐसे एक महान व्यक्ति का आत्मकथांश जो संघर्षों से लड़कर प्रगति की ओर बढ़ता है।

मुर्दहिया

आत्मकथा

मूर्खता मेरी जन्मजात विरासत थी। मानव जाति का वह पहला व्यक्ति जो जैविक रूप से मेरा खानदानी पूर्वज था, उसके और मेरे बीच न जाने कितने पैदा हुए, किंतु उनमें से कोई भी पढ़ा-लिखा नहीं था। लगभग तेईस सौ वर्ष पूर्व यूनान देश से भारत आए मिनांदर ने कहा कि आम भारतीयों को लिपि का ज्ञान नहीं है, इसलिए वे पढ़-लिख नहीं सकते। उसके समकालीनों ने तो कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, किंतु आधुनिक भारतीय पंडों ने मिनांदर का खूब खंडन-मंडन किया। हकीकत तो यह है कि आज भी करोड़ों भारतीय मिनांदर की कसौटी पर खरा उतरते हैं। सदियों पुरानी इस अशिक्षा का परिणाम यह हुआ कि मूर्खता और मूर्खता के चलते अंधविश्वासों का बोझ मेरे पूर्वजों के सिर से कभी नहीं उतरा...।

शुरुआत यदि दादा से ही करूँ तो पिता जी के अनुसार उन्हें एक भूत ने लाठियों से पीट-पीटकर मार डाला था। अपने पांच भाइयों में पिता जी सबसे छोटे थे। घर में सभी का कहना था कि दादा जी, जिनका नाम जूठन था, गांव से थोड़ा-सा दूर झाड़ियों वाले टीले के पास छोटे से खेत में मटर की फसल को देर रात जानवरों से बचाने के उद्देश्य से गए थे। मटर के खेत में उन्हें फली खाता एक साही नामक जानवर दिखाई दिया, क्योंकि रात उजाली थी। दादा जी ने अपनी लाठी से साही पर हमला बोल दिया। लाठी लगते ही साही रौद्र रूप धारण करते हुए अपने लंबे-लंबे कँटीले रोंगटों को फैलाकर अंतर्धान हो गया। घर वालों के अनुसार वह साही नहीं, बल्कि उस क्षेत्र का भूत था। इस प्रकरण के बाद दादा

जी खेत से डरकर तुरंत घर आ गए। इस भूत का किस्सा सारे गांव में फैल गया। डरकर हर किसी ने उधर जाना बंद कर दिया। सभी कहने लगे कि भूत बदला अवश्य लेगा।

इसी बीच दादा जी एक दिन खलिहान में रात को सोए हुए थे कि साही संतरित भूत लाठी लेकर आया और उसने दादा जी को पीट-पीटकर मार डाला। दादा जी को मैंने कभी देखा नहीं था, क्योंकि उनकी यह भुतही हत्या मेरे जन्म से अनेक वर्ष पूर्व हो चुकी थी। इस हत्या की गुत्थी मेरे लिए आज भी एक उलझी हुई पहेली बनी हुई है। तर्कसंगत तथ्य तो शायद यही होगा कि दादा जी की गांव के ही किसी अन्य व्यक्ति से अवश्य ही दुश्मनी रही होगी और उसने साही भूत का मनोवैज्ञानिक बहाना निर्मित कर उन्हें मार डाला हो। सच्चाई चाहे जो भी हो, इस भुतही प्रक्रिया ने मेरे खानदान के हर व्यक्ति को घनघोर अंधविश्वास के गर्त में धकेल दिया। परिणामस्वरूप घर में भूत बाबा की पूजा शुरू हो गई। घर में ओझैती-सोखैती शुरू हो जाती थी। ऐसे भुतहे वातावरण में किसी शिशु का जन्म आजमगढ़ जिले के धरमपुर नामक गांव में जुलाई, 1949 को हुआ हो तो उसकी विरासत कैसी होगी?

प्रसंगार्थ

विरासत - परंपरा

खानदानी - कुल क्रमागत (कुल से संबंधित)

यूनान देश - Greece

मिनांदर - A philosopher, एक दार्शनिक

हकीकत - सच्चाई

कसौटी - सोना परखने का एक काला पत्थर

बोझ - भार

शुरुआत - आरंभ

लाठी - उंडा

झाड़ी - bush

टीला - hill

मटर - a grain

फसल - crop

प्रकरण - संदर्भ, प्रसंग

किस्सा - कथा

खलिहान - काटी हुई फसल के रखने का स्थान

गुत्थी - उलझाव, समस्या

तथ्य - fact

मनोवैज्ञानिक - psychological

बहाना - कारण

खानदान - कुल

धकेल - push

ओझा - भूत-प्रेत आदि का असर मंत्रोपचार द्वारा खतम करनेवाला व्यक्ति (पुरोहित)

ओझैती-सोखैती - भूत-प्रेत आदि के आवाहन क्रिया

अनुवर्ती कार्य

सूचनात्मक वाचन

- आत्मकथांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।
  1. लेखक की जन्मजात विरासत क्या थी?
  2. जैविक रूप से मानव जाति का पहला व्यक्ति कौन था?
  3. मिनांदर भारत कब आए? कहाँ से आए?
  4. किसने मिनांदर का खूब खंडन-मंडन किया?
  5. सदियों पुरानी अशिक्षा का परिणाम क्या था?
  6. दादाजी को किसने मार डाला था?
  7. दादाजी का नाम क्या था?
  8. मटर के खेत में दादाजी को क्या दिखाई दिया?
  9. घरवालों के अनुसार साही कौन था?

विश्लेषणात्मक वाचन

- आत्मकथांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।
  1. मिनांदर के अनुसार भारतीय पढ़-लिख नहीं सकते। क्यों?
  2. झाड़ियोंवाले टीले के पास छोटे से खेत में दादाजी क्यों गए थे?
  3. लाठी लगने पर साही ने क्या किया?
  4. हर किसी ने खेत पर जाना बंद कर दिया। क्यों?
  5. दादाजी की मृत्यु कैसे हुई?
  6. घर में भूत बाबा की पूजा कैसे शुरू हुई?

सारांश

लेखक के पूर्वजों में से कोई भी पढ़ा-लिखा नहीं था। अशिक्षा के परिणाम स्वरूप अंधविश्वास का बढ़ता प्रचार है। पिताजी के अनुसार दादा को भूत ने लाठियों से पीटकर मार डाला था। वास्तविकता तो यह होगा कि दादाजी को गांव के किसी अन्य व्यक्ति से दुश्मनी रही होगी और भूत का बहाना निर्मित कर उन्हें मार दिया होगा। इस भुतही प्रक्रिया से खानदान के सब लोग अंधविश्वास के चक्कर में आ गए और घर में भूत बाबा की पूजा शुरू हुई। ऐसे वातावरण में लेखक का जन्म हुआ था।

निर्धारण के प्रश्न

- **सही क्रम के अनुसार लिखें।**

1. दादाजी को एक भूत द्वारा लाठियों से पीट-पीटकर मार डालना।
2. मटर के खेत में साही नामक जानवर दिखाई देना।
3. फसल को देर रात जानवरों से बचाने के उद्देश्य से जाना।
4. रौद्र रूप धारण करके साही का अंतर्धान हो जाना।
5. दादाजी द्वारा लाठी से साही पर हमला बोलना।

- 'बढ़ता अंधविश्वास घटती मानवता' शीर्षक विषय पर संगोष्ठी चलाएँ। संगोष्ठी केलिए आलेख तैयार करें।
  - शिक्षा का अभाव और अंधविश्वास का बढ़ाव
  - प्रगति में रुकावट
  - रीति-रिवाज़ों के नाम पर अंधविश्वास का बढ़ाव
  - शिक्षा के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता

उत्तर-सूचक

सूचनात्मक वाचन

1. मूर्खता लेखक की जन्मजात विरासत थी।
2. जैविक रूप से मानव जाति का पहला व्यक्ति मेरा खानदानी पूर्वज था।
3. लगभग तेईस सौ वर्ष पूर्व यूनान देश से मिनांदर भारत आए।
4. आधुनिक भारतीय पंडों ने मिनांदर का खूब खंडन-मंडन किया।
5. सदियों पुरानी अशिक्षा का परिणाम यह हुआ कि मूर्खता और मूर्खता के चलते अंधविश्वासों का बोझ लेखक के पूर्वजों के सिर से कभी नहीं उतरा।
6. दादाजी को एक भूत ने लाठियों से पीट-पीटकर मार डाला था।
7. दादाजी का नाम जूठन था।
8. मटर के खेत में उन्हें फली खाता एक साही नामक जानवर दिखाई दिया।
9. घरवालों के अनुसार साही उस क्षेत्र का भूत था।

विश्लेषणात्मक वाचन

1. क्योंकि आम भारतीयों को लिपी का ज्ञान नहीं है।
2. मटर की फसल को देर रात जानवरों से बचाने के उद्देश्य से गए थे।
3. लाठी लगने पर साही रौद्र रूप धारण करते हुए अपने लंबे-लंबे कँटीले रोंगटों को फैलाकर अंतर्धान हो गया।
4. भूत के बदला लेने के डर से हर किसीने खेत पर जाना बंद कर दिया।
5. साही संतरित भूत ने लाठी लेकर दादाजी को पीट-पीटकर मार डाला।
6. लेखक के दादाजी की हत्या भूत द्वारा हुई। इस भुतही प्रक्रिया से घर के हर व्यक्ति अंधविश्वास के गर्त में पड़ गए और घर में भूत बाबा की पूजा शुरू हुई।

लेखक-परिचय

डॉ. तुलसीराम का जन्म 1 जुलाई 1949 को आजमगढ़ जिले के धरमपुर नामक गाँव में हुआ। वे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष थे। वे विश्व कम्यूनिस्ट आंदोलन तथा रशियन मामलों के विशेषज्ञ भी थे। डॉ. तुलसीराम ने अंतरराष्ट्रीय बौद्ध आंदोलन, दलित राजनीति तथा साहित्य से संबंधित विषयों पर सैकड़ों लेख लिखे। उन्होंने 'अश्वघोष' नामक प्रसिद्ध बुद्धिस्ट एवं साहित्यिक पत्रिका का संपादन भी किया। 'अंगोला का मुक्ति संघर्ष', सी.आई.ए. राजनीतिक विध्वंस का अमरीकी हथियार, द हिस्ट्री ऑफ कम्यूनिस्ट मूवमेंट इन ईरान,

पर्सिया टू ईरान (वन स्टेप फारवर्ड टू स्टेप्स बैक), आइडिओलॉजी इन सोवियत-ईरान रिलेशन्स (लेनिन टू स्टालिन) तथा मुर्दहिया इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। उनका निधन 13 फरवरी 2015 को हुआ।

स्वनिर्धारण

- इस पाठ-भाग के अध्ययन से आप क्या पा सके?
  बक्स पर ✓ चिह्न लगाएँ।
  - आत्मकथा का आशय ग्रहण कर सका/सकी। ☐
  - आत्मकथा का आशय ग्रहण करके विधांतरण कर सका/सकी। ☐
  - संगोष्ठी के लिए आलेख तैयार कर सका/सकी ☐

9

अधिगम उपलब्धियाँ

- समकालीन कविता का आशय ग्रहण करता है और शैलीगत विशेषताएँ पहचानता है।
- कविता का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।

एक सिक्के के दो पहलू होते हैं।

कैसा सार्थक वाक्य है! पढ़ें,
ज्ञानेंद्रपति की कविता 'एक टैंक'

एक टैंक

कविता

कहीं की मशहूर लड़ाई में
युद्धाहत एक टैंक
नुमाइशी पिंजरे में रखा है मैदान के छोर पर

बहुत बारूद बहुत खून इसने बहाया
बेख़ौफ़ घूमा युद्ध के मैदानों में
इसके क्रोध-ज्वाल में सब कुछ हो जाता था भस्म

काल था यह साक्षात् काल
शत्रु-दल का दर्प बन जाता था इसके सामने सूखा पत्ता

यह सारा इतिहास वहीं
एक टीन के टुकड़े पर लिखा है
गाँव से आई दो विस्मित स्त्रियाँ उसे निहारती हैं
एक बच्चा ईंट से उसके ललाट पर निशाने लगाता है
बारूद उगलने वाली लंबी नली के मुँह से
उड़ती है एक चिड़िया
वहाँ उसका घोंसला है।

प्रसंगार्थ

मशहूर - प्रसिद्ध
लड़ाई - युद्ध
युद्धाहत - युद्ध के कारण आहत
नुमाइशी - Exhibition
पिंजरा - Cage
छोर - किनारा
बारूद - Gun Powder
खून - रक्त
बेख़ौफ - निडर (निर्भय)
घूमा - Turned

दर्प - घमंड
टीन का टुकड़ा - Metal Sheet
निहारना - देखना
ईंट - Brick
ललाट - माथा
निशाना लगाना - To hit the target
उगलना - थूकना (to spit out)
नली - pipe
घोंसला - nest

अनुवर्ती कार्य

सूचनात्मक वाचन

- कविता के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।
  1. टैंक कहाँ रखा गया है?
  2. युद्ध के मैदान में टैक कैसे घूमा?
  3. टैंक के सामने शत्रु-दल का दर्प क्या बन जाता था?
  4. टैंक का इतिहास कहाँ लिखा है?
  5. चिड़िया कहाँ से उड़ती है?

विश्लेषणात्मक वाचन

- कविता के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखें।
  1. टैंक को नुमाइशी पिंजरे में क्यों रखा है?
  2. टैंक के इतिहास के बारे में अपना विचार व्यक्त करें।
  3. अब टैंक की हालत क्या है?

सारांश

हम दो विश्वमहायुद्ध देख चुके हैं। युद्ध में टैंकों की भूमिका बहुत बड़ी है। 'एक टैंक' शीर्षक कविता में किसी प्रसिद्ध लड़ाई में आहत एक टैंक की वर्तमान हालत का वर्णन मिलता है। यह टैंक अनेक युद्धों की

हार-जीत को देख चुका है। अब यह किसी युद्ध से आहत होकर फालतू चीज़ बन गई है। एक मैदान के छोर पर प्रदर्शन वस्तु के समान इसे रखा है। टैंक का भूतकाल गौरवपूर्ण था। इसने निडर होकर युद्ध के मैदानों में बहुत बारूद और खून बहाया है। यह साक्षात् काल का प्रतिरूप बनकर सबको भस्म करता था। इसके सामने शत्रु दल का घमंड सूखा पत्ता बन जाता था। अब टैंक की हालत अत्यंत दयनीय है। यह केवल प्रदर्शन वस्तु बना है। इसका सारा इतिहास एक टीन के टुकड़े पर लिखा है। गाँव से लोग अपने बच्चों के साथ इसे देखने आते हैं। स्त्रियाँ आश्चर्यचकित हो जाती हैं। एक बच्चा उसके माथे पर पत्थर मारता है। बारूद उगलनेवाली लंबी नली को एक चिडिया ने घोंसला बना लिया है।

निर्धारण के प्रश्न

- *कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।*

अपनी परख

1. कवि और काव्यधारा का परिचय
2. कविता का आशय और विश्लेषण
3. काव्यगत विशेषताएँ

उत्तर-सूचक

सूचनात्मक वाचन

1 टैंक मैदान के छोर पर रखा गया है।

2 युद्ध के मैदान में टैक बेखौफ़ घूमा।

3 शत्रु दल का दर्प सूखा-पत्ता बन जाता था।

4 टैंक का इतिहास उसके ललाट पर लिखा है।

5 चिड़िया एक लंबी नली के मुँह से उड़ती है।

विश्लेषणात्मक वाचन

1 टैंक किसी युद्ध से आहत होकर फालतू चीज़ बन गई है। इसलिए उसे मैदान के छोर पर प्रदर्शन वस्तु के रूप में रखा है।

2. टैंक का भूतकाल गौरवपूर्ण था। उसने निडर होकर युद्ध के मैदानों में बहुत बारूद और खून बहाया है। यह साक्षात् काल का प्रतिरूप बनकर सबको भस्म करता था। इसके सामने शत्रु दल का घमंड दूर हो जाता था।

3. आज टैंक की हालत अत्यंत दयनीय है। यह केवल एक प्रदर्शन वस्तु बना है। इसका सारा इतिहास केवल एक नामपट्टी पर अंकित है। गाँववालों के लिए कौतूहल की चीज़ तथा बच्चों के लिए खिलौना बन गया है। उसकी नली चिड़िया के लिए आवास-स्थान बन गई है।

लेखक-परिचय

ज्ञानेंद्रपति का जन्म जनवरी 1950 झारखण्ड के एक गाँव पथरगामा में हुआ। 'आँख हाथ बनते हुए' 'शब्द लिखने के लिए ही यह कागज़ बना है' 'गंगातट' 'संशयात्मा' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

स्वनिर्धारण

- इस पाठ-भाग के अध्ययन से आप क्या पा सके?

  बक्स पर ✓ चिह्न लगाएँ।

  - कविता का आशय ग्रहण कर सका/सकी। ☐
  - कविता की शैलीगत विशेषताएँ समझ सका/सकी। ☐
  - कविता का आस्वादन करके टिप्पणी लिख सका/सकी। ☐

परिशिष्ट

निबंध साहित्य

निबंध गद्य साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। लेखक अपने मन की प्रवृत्ति के अनुसार स्वच्छन्द गति से टूटी हुई सूत्र शाखाओं पर विचरता चलता है। इसी कारण से लेखक एक ही बात को भिन्न भिन्न दृष्टियों से देखने लगता है। हिंदी में निबंध का विकास भारतेंदु युग में पत्र-साहित्य की उन्नति के साथ हुआ था। 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में निबंध साहित्य की रूपरेखा में परिवर्तन हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी के आविर्भाव से गंभीर साहित्यिक निबंधों की परंपरा का उद्घाटन हुआ। इस काल में विचारात्मक, भावात्मक, समीक्षात्मक तथा वर्णनात्मक शैली के निबंध लिखे गए। इसके बाद आचार्य रामचंद्रशुक्ल के साथ निबंध साहित्य के नए युग का आविर्भाव हुआ। उनके निबंधो में अनुभूतियों का व्यापक रूप से चित्रण हुआ। स्वातंत्र्योत्तर काल, हिंदी निबंधों का चरमोत्कर्ष समय है। शिल्प संरचना एवं गठन की दृष्टि से इस समय के निबंध बेजोड़ है। बनारसी दास जैन, अंबिकादत्त व्यास, किशोरी लाल गोस्वामी, गोपाल, राम गहमरी, बालमुकुंद गुप्त, गुलेरी, नंददुलारे वाजपेयी, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, नगेंद्र, रामविलास शर्मा, शिवदानसिंह चौहान, जैनेंद्र, नामवरसिंह आदि हिंदी के शीर्षस्थ निबंधकारों में प्रमुख है।

हाइकू

हाइकू मूल रूप में जापानी कविता रूप है। हाइकू का जन्म जापानी संस्कृति और सौंदर्य चेतना में हुआ और वहीं पला। आज हाइकू जापानी साहित्य की सीमाओं को पारकर विश्व साहित्य की निधि बन चुकी है।

हाइकू कविताएँ तीन पंक्तियों में लिखी जाती हैं। हिंदी हाइकू में पहली पंक्ति में 5 दूसरी पंक्ति में 7 और तीसरी पंक्ति में 5 अक्षर के क्रम से कुल 17 अक्षर होते है।

समकालीन कविता

समकालीन कविता में आक्रोश एवं विद्रोह का प्रत्यक्ष स्वर बहुत कम सुनाई पड़ता है। वह शांत और संयत स्वर में कथ्य में छिपी मानवीय संवेदना को गहरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करती है। समकालीन कविता हमारे सम्मुख समस्या प्रस्तुत करती है, पर वह समाधान की उम्मीद नहीं रखती। वह बेसहारों की कविता है, हाशिएकृतों की कविता है और अंततः हारे हुओं की कविता है।

पारिभाषिक शब्द

पारिभाषिक शब्द विशिष्ट अर्थवाले शब्द हैं। हिंदी में पारिभाषिक शब्दों की जानकारी से रोज़गारी की संभावना बढ़ जाती है। हिंदी में उपाधियाँ प्राप्त स्नातकों के लिए केंद्र सरकार, बैंक तथा विभिन्न निगमों में अनुवादक से लेकर राजभाषा अधिकारी तक के पदों के अवसर हैं। अनुवाद तथा पारिभाषिक शब्दों की जानकारी ऐसे पदों पर नियुक्ति का पहला मापदंड है। केंद्र सरकार के अंतर्गत गृह मंत्रालय के अधीन एक राजभाषा विभाग और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग है। ये दोनों क्रमशः राजभाषा एवं पारिभाषिक शब्दों के प्रचार एवं प्रसार में कार्यरत हैं।

नारीपक्ष कविता

कई कवियों ने नारी जीवन के दुख-दर्दों को अपनी कविताओं का विषय बनाया है। नारी की समस्याओं को निकट से समझकर उनके प्रति हमदर्दी प्रकट की है। उनकी लेखनी में भारतीय नारी का सच्चा रूप उभरकर आया है। आज नारीवादी साहित्य का प्रसार हुआ है, जिसमें नारी के विभिन्न रूप दृष्टिगत होते हैं।

स्वतंत्रतापूर्व हिंदी कहानी

हिंदी कहानी के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ जयशंकर प्रसाद की इंदु मासिक पत्रिका में सन 1911 में प्रकाशित 'ग्राम' नामक कहानी से होता है। उन्होंने वातावरण प्रधान कहानियों में प्रकृति चित्रण की परंपरा स्थापित कर कहानी कला को ठोस साहित्यिक रूप प्रदान किया। इस काल की कहानियों में पक्के यथार्थवाद के बीच मर्यादा के भीतर भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यंत निपुणता के साथ पिरोया गया है। उनमें घटनाएँ बोलती हैं, पात्रों की अपेक्षा। विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक, चंद्रधरशर्मा गुलेरी, चतुरसेन शास्त्री आदि इस समय के प्रमुख कहानीकार थे।

समकालीन कहानी

समकालीन कहानी जीवन की प्रत्येक स्थिति और समस्या को कहानी का विषय बनाती है। लोककथा शैली, आंचलिक शैली, लघुकथा शैली, प्रतीक शैली, नायकहीन शैली आदि समकालीन कहानी के प्रयोग हैं। अपने समय के सारे अंतर्विरोधों प्रवचनाओं एवं असंगतियों को चित्रित करने का प्रयास समकालीन कहानी करती है। सामान्य मनुष्य, ज़िंदा परिवेश तथा भोगे हुए जीवन की ईमानदारी के साथ कलात्मक अभिव्यक्ति समकालीन कहानी करती है।

आत्मकथा

आत्मकथा में लेखक स्वयं अपनी बात कहता है और अपने जीवन की घटनाओं को प्रकाश में लाता है। इसके लिए आत्मकथाकार अतीत की स्मृति में जीता है और वर्तमान की सच्चाई में अपने को परखता है। आत्मकथा उसके जीवन की कमियों और खूबियों का संतुलित इतिहास है। इसमें वह एक साथ स्रष्टा और सामग्री की भूमिका निभाता है। आत्मकथा पाठकों के लिए प्रेरणा का आश्रय स्रोत है। आत्मगाथा, आत्मवृत्त, आपबीती, आत्मचरित, मेरी कहानी जैसी संज्ञाओं से भी आत्मकथा पुकारी जाती है।